X-

सं. हो. वि./सोनीपत/95-84/36738.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं शिर्मा रवड़ प्रा. लि., कुण्डली सीनीपत, के श्रीमक श्री मोती लाल भागव तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिये, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-अम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ मठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए. ओ. (ई)-अम→70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:—

क्या श्री मोतीलाल भागेंव की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.ग्रो. वि/सोनीपत/96-84/36745.—चूंकि हरियाणा केराज्यपाल की राये है कि मैं सिगमा रबड़ प्रा॰ लि॰, कुन्डली सोनीपत, के श्रीमक श्री तेजू प्रशाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौधोधिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिए, स्रव, श्रौद्योगिक विवाद स्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी स्रिधसूचना सं. 964 1-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी स्रिधसूचना सं० 3864-ए श्रो.(ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के स्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत ता उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:—

क्या श्री तेज प्रशाद की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो वि/सोनीपत/97-84/36752.-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं कि सिगमा रवड प्रा० लि॰, कुन्डली सोनीपत, के श्रमिक श्री उमेश कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीधोधिक विवाद है,

म्रोर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को व्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछंनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, ग्रौग्रोगिक विवाद ग्रिश्वनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधसूचना सं. 9641-1-श्रम, 70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रिधसूचना सं० 3864-ए.ग्रो. (ई)-श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वार उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संम्बिधत नीचे तिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है;—

क्या श्री उमेश कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

संश्रो श्री नीपत / 98-84 / 36759 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल को राये है कि मैं शिव सिगमा रवड़ प्रा० लिश्, कुन्डली सोनीपत, के श्रीमक श्री चिन्द्रका तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य उसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्री छोगिक विवाद है;

भीर चृंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतृ निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं:--

इस लिये, अब, भीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641—1—श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864—ए. श्रो. (ई)-श्रम—70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:—

क्या श्री चिन्द्रका की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. क्रो.बि./सोनीपत/99-84/36766.—बृत्ति हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० सिगमा रवड़ प्रा०लि०, कुन्डली सोनीपत के बिमक ब्री राजेन्द्रा तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई विद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यवाल विवाद को व्यायनिर्णय हेतु निविध्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, भौडोगिक विवाद प्रधितियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा मरकारी प्रधिसूचना सं. 9641-1-अम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी प्रधिसूचना सं० 3864-ए. थ्रो. (ई) अम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त प्रधितियम की धारा 7 के प्रधीन गठित अम न्यायालय रोहतक को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है।

क्या श्री राजेन्द्रा की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. म्रो.वि./सोनीपत/100-84/36773.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं॰ सिगमा रवड़ प्रा. लि., कुन्डली, सोनीपत के श्रमिक श्री सिकन्दर तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौ द्योगिक विवाद है;

श्रीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्ठितयम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिष्ठसूचना सं. 9641—1—श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, निश्चित के साथ गठित सरकारी श्रिष्ठसूचना सं. 3864—ए.श्रो.(ई) श्रम—70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिष्ठनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री सिकन्दर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भ्रो.वि./सोनीपत/101-84/36780.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं शितमा रवड़ प्रा. लि., कुन्छली, सोनीपत के श्रमिक श्री बाल किशन तया उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रिधिसूचना सं. 3864-ए श्रो (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय हेतू निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:--

वया श्री बाल किशन की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? तो वह किस राहत का हकदार है ?

एस.के. महेशवरी, संयुक्त एवं संचिव हरियाणा सरकार, श्रम विभाग।